आरती श्री दुर्गा जी की

जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामा गौरी।
तुमको निशिदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिवरी ॥ टेक ॥
मांग सिंदूर विराजत टीको मृगमद को।
उज्जवल से दोऊ नैना चन्द्रबदन नीको ॥ जय ॥
कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै।
रक्तपुष्प गलमाला कंठन पर साजै ॥ जय ॥
केहरि वाहन राजत खड्ग खप्पर धारी।
सुर–नर–मुनिजन सेवत तिनके दुखहारी ॥ जय ॥
कानन कुण्डल शोभित नासाग्रे मोती।
कोटिक चन्द्र दिवाकर राजत सम ज्योति ॥ जय ॥
शुम्भ निशुम्भ बिडारे महिषासुर घाती।
धूम्र विलोचन नैना निशदिन मदमाती ॥ जय ॥
चण्ड–मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे।
मधु–कैटभ दोऊ मारे सुर भयहीन करे ॥ जय ॥
ब्रह्माणी रुद्राणी तुम कमला रानी।
आगम निगम बखनी तुम शिव पटरानी ॥ जय ॥
चौसठ योगिनी मंगल गावत नृत्य कर भैरु।
बाजत ताल मृदंगा अरु बाजत डमरू ॥ जय ॥
तुम ही जग की मातां तुम ही हो भरता।
भक्तन की दुःख हरता सुख सम्पत्ति दाता ॥ जय ॥
भुजा चार अति शोभित वर मुद्रा धारी।
मनवांछित फल पावत सेवत नर नारी ॥ जय ॥
कंवल थाल विराजत अगर कपूर बाती।
श्री मालकेतु में राजत कोटि रतन ज्योति ॥ जय ॥
श्री अम्बे की आरती जो कोई नर गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी सुख–सम्पत्ति पावे ॥ जय ॥

Can be Downloaded from https://pdfformats.com/

इस आरती को https://pdfformats.com/ से पुनः डाउनलोड कर सकते है|